# भाषा

## सच की धरती पर अभिव्यक्ति

**राम आह्लाद चौधरी**



Scanned by CamScanner

# भाषा : सच की धरती पर अभिव्यक्ति

**राम आह्लाद चौधरी**

सच की धरती पर अभिव्यक्ति भाषा है, जिसे कोई विचारों की दुनिया का सम्बन्ध कहता है; तो कोई विचारों के आदान-प्रदान का वाहक, तो कोई विचारों के बीच का सेतु मानता है। दरअसल करुणा और कर्म के ताने-बाने से भाषा की बुनावट पूरी होती है; जो विचारों की दुनिया में सम्बन्ध को सहानुभूति और संभावनाओं के जरिये संजीवनी प्रदान करती है। इसी संजीवनी को सत्य की बुनियाद पर भाषा स्थापित करने के लिए अनुशासन में आबद्ध होकर विचारों के प्रति प्रतिबद्ध होती है। व्याकरण के नियमों को स्वीकार करना जहां एक ओर भाषा की अनुशासनप्रियता है, वहीं भाव की दुनिया में नये-नये चिंतनों के अनुसार सम्बन्ध के नये क्षितिज को रेखांकित करना उसकी लोकप्रियता है। दरअसल अनुशासनप्रियता और लोकप्रियता भाषा के ऐसे दो गुण हैं, जिन गुणों के आधार पर भाषा की रवानगी युग-युग से व्याप्त है; जो सत्य को यथार्थ की भूमि पर स्थापित करती है। जहां एक ओर भाव विहीन भाषा सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाती है; वही दूसरी ओर विचार विहीनभाषा सत्य की संभावनाओं को हकीकत में नहीं बदल पाती है। विचार और संभावनाओं के बीच तारतम्य सिर्फ भाषा स्थापित करती है, जिसके सम्बन्ध में विद्वान कहते हैं कि भाषा सेतु का निर्माण करती है।

"जो सत्य सर्वोच्च है, जो पवित्रता के तेज से,क्षमा के वीर्य से, प्रेम की अजेय शक्ति से परिपूर्ण है, उसी को हम मंगल समझकर शिरोधार्य करेंगे। ... अपने अन्तःकरण की सारी शक्तियों को सृजनशक्ति में परिणत करेंगे और रचना-कार्य में प्रवृत्त होंगे। यदि हम यह कर सकें, यदि ज्ञान-प्रेम-कर्म से भारत के इस अभिप्राय में नियुक्त हो सकें, तो हमारी मोहमुक्त पवित्र दृष्टि स्वदेश के इतिहास में उस अक्षय, अद्वैत सत्य को देखेगी जिसके बारे में ऋषियों ने कहा है :'स सेतुर्विधृरिषां लोकानाम', वही समस्त लोकों की विधृति है, सारे विच्छेदों का सेतु है। "-रवीन्द्रनाथ

कविगुरू रवीन्द्रनाथ ने जिस 'सेतु' का निरुपण किया है, दरअसल उसका भौतिक रूप भाषाओं के बीच अंतर्सम्बन्ध के जरिये प्रकट होता है। हिंदी और बांग्ला का अंतर्सम्बन्ध युग-युग से है। इस पर रोशनी डालते हुए महान भाषा वैज्ञानिक सुनीति



Scanned by CamScanner

चाटुर्ज्या ने अपने आलेख राष्ट्र भाषा हिंदी में लिखा है – "आज से लगभग एक हजार साल पहले जब पूरब की अपभ्रंश से बंगला-भाषा ने अपने रूप को प्राप्त किया, जब बंग-भाषी कवियों में न अपनी नवजात मातृभाषा की चर्चा थी, साथ ही साथ इनमें पश्चिमी या शौरसेनी अपभ्रंश में (जो कि उस समय की एक प्रकार की राष्ट्रभाषा थी और हिंदी ही की पूर्व मूर्ति थी) पद-रचना करने का रिवाज बड़े जोश से चलता था।" इस जोश में निश्छलता की करुणा विद्यमान है, जो मोहमुक्त पवित्रता को नया अंदाज देते हुए दो भिन्न भाषाओं के बीच स्थापित ऐतिहासिक ऐक्य-बोध को संजीवनी प्रदान करती है, जिसकी खुशबू मानवीयता को अमरता हासिल करने के लिए उत्सुक करती है।

निश्छल-निर्मल भाव की प्रक्रिया अंतर्सम्बन्ध के जरिये अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करते हुए मानवीय जीवन को न केवल हजारों-हजार सालों के सामाजिक वर्ज्य पदार्थों से निजात पाने की राह दिखाती है बल्कि जिंदगी को नयी रोशनी से रोशन करती है। समाज के विविध पड़ावों पर भिन्न-भिन्न अंतर्सम्बन्धों का अवलोकन होता है; इतिहास इस अवलोकन की झांकी प्रस्तुत करता है। परन्तु भाषाओं का अंतर्सम्बन्ध अपने-आप में बेमिसाल हैं, जिसमें हिंदी और बांग्ला का अंतर्सम्बन्ध अपनी अद्वितीयता के लिए जग-जाहिर है।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान में सम्बन्ध और अंतर्सम्बन्ध पर विचार-विमर्श करने की प्रासंगिकता बढ़ी है, क्योंकि विगत दो-ढाई दशकों में सम्बन्ध की कड़ियां कमजोर तो नहीं बल्कि हतप्रभ जरूर हुई हैं। समय की मांग को ध्यान में रखते हुए भाषाओं के अंतर्सम्बन्धों पर विचार करना सामाजिक बुनियाद को मजबूत करने का सार्थक प्रयास है। इस पर विचार करने की अपेक्षा इसे लागू करने की कोशिश अपेक्षित है। जब तक भावना को अमली जामा नहीं पहनाया जाता है, तब तक बात बनती कहां है? दरअसल भाषा एक साथ कई कार्यों को सम्पन्न करती है। ज्ञान, समन्वय, मैत्री और त्याग जैसे महत्वपूर्ण गुणों से लैस होने का अर्थ ही भाषा है, जो समाज को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास करती है। भाषा का यह प्रयास समाज में शत-प्रतिशत सफल होता है। यदि भाषा की यह कोशिश सफल नहीं होगी, तो समाज खंड-खंड हो सकता है। यही कारण है कि भाषा की इस चेष्टा को और मजबूत करने के उद्देश्य से समाज के उन सभी स्तरों तक ले जाने की कोशिश वक्त का तकाजा है, जिन स्तरों पर अभी तक भाषा के सम्बन्ध में सही-सही मूल्यांकन नहीं हो पाया है।

समाज में हर वक्त भाषा को एक संवेदनशील मुद्दे के रूप में देखा जाता है। मुद्दा अपने-आप में संवेदनशील होता है, चाहे किसी चीज का मुद्दा क्यों न हो। उसके पीछे सोची-



Scanned by CamScanner

समझी चाल होती है, वैसे भाषा हर चाल की असलियत को उजागर करती है तथा एक सुन्दर से सुन्दरतम पड़ाव पर पहुँचाने का प्रयास करती है। भाषा की विकास-यात्रा अपनी ऐतिहासिकता को साथ लेकर चलती है। भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपने अतीत पर नियंत्रण रखती है तथा अपने भविष्य को अधिक–से-अधिक समृद्ध करने के लिए अन्य भाषाओं के साथ अंतर्सम्बन्ध स्थापित करती है। सुनहले भविष्य की गारंटी अंतर्सम्बन्ध को पुष्ट करने की पहल और समझदारी है, इसके बिना भाषा आगे नहीं बढ़ सकती है। जिस भाषा में अंतर्सम्बन्ध को मजबूत करने की परम्परा नहीं होती है, वह भाषा धीरे-धीरे विचार शून्यता का शिकार हो जाती है और कालांतर में अपना अस्तित्व खो देती है।

हिंदी भाषा भारत का अस्तित्व है तथा भारतीयत्व का विजय-ध्वज है, जिसकी परम्परा अत्यंत समृद्ध है, जो वैदिक, लौकिक संस्कृत, पाली शौरसेनी प्राकृत, शौरसेनी अपभ्रंश, ब्रजभाषा से होती हुई खड़ी बोली हिंदी तक पहुँची है, जो आंतः प्रादेशिक भाषाओं की खुशबू को लेकर निरतंर आगे बढ़ रही है। हिंदी जिस तरह अपनी काया को निर्मित करती है, ठीक उसी तरह दूसरी भाषाओं से ऊर्जा ग्रहण करने में पीछे नहीं रहती है। हिंदी भाषा अंतर्सम्बन्धों को निभाने में विश्वास रखती है। साथ ही अपनी जनपदीय पहचान को बरकरार रखने में हिंदी भाषा अभूतपूर्व नजीर पेश करती है। यही कारण है कि हर मुश्किल को अपनी विजय का साधन बना लेती है।

व्याकरण की दुनिया से भाव की दुनिया को रौशन करने की कला में हर भाषा सिद्ध होती है। यदि इस दृष्टि से विचार किया जाय, तो हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसने अपने व्याकरण को स्थिरता ही प्रदान नहीं की है बल्कि उसे तार्किकता भी दी है। उस तार्किकता को ग्रहण योग्य बनाने के पीछे हजारों कारण हो सकते हैं, पर सबसे महत्वपूर्ण कारण अंतर्सम्बन्ध है। हिंदी भाषा ने दुनिया की प्रायः हर भाषा से अपना सम्बन्ध बनाने का काम किया है और धीरे-धीरे उस सम्बन्ध को अपने अंतर्सम्बन्ध में तब्दील करने का प्रयास किया है।

हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्ध की समृद्ध परम्परा रही है। वर्तमान में इस परम्परा को ठोस आधार देने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। इन दोनों भाषाओं के अंतर्सम्बन्ध की परम्परा युगीन चेतना का वाहक तथा ऐतिहासिक सच्चाई का धारक है। युगीन चेतना और ऐतिहासिक सच्चाइयों को ध्यान में रखते हुए इन दोनों भाषाओं के अंतर्सम्बन्ध की परम्परा पर विचार करना अपेक्षित है, ताकि वर्तमान की सामाजिक-सांस्कृतिक संभावनाओं को हकीकत में बदलना संभव हो सके। इससे हमारा वतन हर दिशा में आगे बढ़ सकता है। इस दिशा में



Scanned by CamScanner

विचार करने से पहले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उस आलेख की चर्चा करना अनुचित नहीं होगा, जिस आलेख में उन्होंने हिंदी भाषा के विकास में बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की भूमिका पर आलोकपात किया है। उस आलेख का शीर्षक है – 'बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी और हिंदी' ; वह आलेख सन् १९३१ के नवंबर महीने में 'विशाल भारत' पत्रिका में छपा था।

इस सोसाइटी ने विभिन्न झंझावतों के बावजूद 'पृथ्वीराजरासो' से लेकर इंशाअल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' तक अनुवाद प्रस्तुत ही नहीं किया बल्कि गीतों का भी अनुवाद प्रस्तुत किया। नूरपुर के चारण गंभीर राय के गीतों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया। ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय ने सोसाइटी के जर्नल में हम्मीर-रासो का अनुवाद प्रकाशित किया। बांग्ला और हिन्दी का अंतर्सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण रहा है, यही कारण है कि ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाद्याय ने इस दुनिया को हम्मीर रासो की महत्ता बतलायी। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बिल्कुल सही लिखा है –" इसी समय विद्यापति को लेकर सोसाइटी जर्नल के पृष्ठों पर आलोचना हुई। पद्मावती का जो संस्करण सोसाइटी ने ग्रियर्सन साहब और पं. सुधाकर द्विवेदी के द्वारा कराया,... गोरखपुर के प्रचलित कुछ भोजपुरी गीतों का अनुवाद भी उसी वर्ष प्रकाशित हुआ था।" इस तरह बंगाल की धरती ने महाकाव्यों से लेकर जनपदीय गीतों को अनूदित कर हिंदी की गरिमा को विश्वफलक पर स्थापित किया।

हिंदी का पूरा भक्ति साहित्य बांग्ला में विद्यमान है। कबीर की वाणी, सूर-मीरा के पद तथा तुलसी की चौपाई से बंगाल का कोना-कोना आलोकित है। पद्मावत का अनुवाद १७वीं सदी में हुआ। आलाओल नामक बंगाली मुसलमान कवि ने इस ग्रंथ के साथ-साथ कई अवधी काव्यों का बांग्ला अनुवाद किया। इस परम्परा को चटगांव के दौलत काजी ने आगे बढ़ाया। १८वीं सदी में ब्रजभाषा के काव्यों का अनुवाद बांग्ला में हुआ। बंगाल में मैथिली और बांग्ला के मिश्रित रूप का भी दर्शन होता है। १५ वीं सदी के अंत में बंगाली वैष्णव कवियों ने राधाकृष्ण लीला विषयक रोचक पदों की रचना की। ब्रज लीला का वर्णन होने के चलते इस भाषा को ब्रज-बुलि कहा गया। बंगाली कवि राय गुणाकर भारतचंद्र ने १८ वीं सदी में अभ्रदा-मंगल काव्य लिखे। १९वीं सदी के आरंभ में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई। आधुनिक बांग्ला, हिंदी और उर्दू के गद्य साहित्य के विकास में इस कालेज की प्रमुख भूमिका रही है।

राजा राममोहन राय ने हिंदी में पत्रिका प्रकाशित की। विद्यासागर ने बैताल पच्चीसी का बांग्ला अनुवाद सन् १८४७ में बेतालपंचविंशति के नाम से किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय की



Scanned by CamScanner

स्थापना सन् १८५७ में हुई। विद्यासागर इस विद्यालय में बांग्ला,हिंदी और संस्कृत के परीक्षक थे। बंगाल के बंकिमचंद, मधुसूदन, गिरीशचंद्र,भूदेव, विवेकानंद, अमृतलाल, रवीन्द्रनाथ, गोविंदलाल बंद्योपाध्याय, भूदेव मुखोपाध्याय के नाम सदा अमर रहेंगे, जिन्होंने इन दोनों भाषाओं के बीच अंतर्सम्बन्ध को मजबूत किया। इस संदर्भ में क्षितिमोहन सेन का नाम सर्वोपरि है, जिन्होंने शिक्षित बंगालियों को हिंदी भाषा की ओर उन्मुख किया। विश्व स्तर पर हिन्दी की महिमा और गरिमा को स्थापित करने में रवीन्द्रनाथ का नाम सबसे पहले रखना आवश्यक है, जिन्होंने हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्ध का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 'A hundred verses from Kabir' नामक पुस्तक में कबीर की अद्वितीयता को स्थापित किया। इस बारे में सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने लिखा – श्री रवींद्रनाथ जी की 'A hundred verses from Kabir' पुस्तक ने भारत के बाहर के अनुभवी जनों के चित्त को रससिक्त किया है। ... इस पुस्तक ने भारत में भी बहुत- से भारतीय जनों के मन में पुरानी हिंदी के साहित्य के लिए अनुराग उत्पन्न कर दिया।

जाहिर है कि प्राचीनयुग में प्रादेशिक भाषाओं का उद्भव नहीं हुआ था। मध्य युग के बंगाल में बांग्ला भाषा का विकास हुआ, जिसने अपने व्याकरण और उच्चारण के चलते अन्य भाषाओं से अलग रहते हुए भी ऐक्यबोध और सांस्कृतिक जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है तथा उत्तर भारत से अपना रिश्ता मजबूत किये हुए है। बंगाली संतों और साधकों का नाथपंथ से लेकर वैष्णव सम्प्रदाय तक मजबूत सम्बन्ध दिखता है। आधुनिक काल में हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्ध पर चर्चा करने का द्वार खोलते हुए सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने बिल्कुल सही उल्लेख किया है – "आधुनिक काल में जैसे बंगला में हिंदी के काफी शब्द आये हैं, वैसे ही हिंदी में भी बंगला शब्द आये हैं। हिंदी गद्य शैली की बनावट में बंगला का भी प्रभाव बहुत मिलता है ... एक भ्रम यह भी पैदा होता है कि क्या हिंदी दूसरी भाषाओं पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहती है?" अंतर्सम्बन्ध तब समाज और संस्कृति को ऊर्जा देता है, जब भ्रामक स्थिति से दोनों भाषाओं को निकालकर प्रशस्त मार्ग प्रदान किया जाय तथा स्वस्थ परिवेश में बतास लेने की सुविधा मुहैय्या करायी जाय। इस बारे में नेताजी ने १९२८ में कलकत्ते में आयोजित राष्ट्र भाषा सम्मेलन का स्वागत करते हुए कहा था –" मैं इस बात को मानता हूँ कि बंगाली लोग अपनी मातृभाषा से अत्यंत प्रेम करते हैं और यह कोई अपराध नहीं है। शायद हममें से कुछ ऐसे आदमी भी हैं, जिन्हें इस बात का डर है कि हिंदी वाले हमारी मातृभाषा बंगला को छुड़ाकर उसके स्थान पर हिंदी रखवाना चाहते हैं। यह भ्रम भी निराधार

Scanned by CamScanner

है। हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है, वह आगे चलकर हिंदी से लिया जाए। अपनी माता से भी प्यारी मातृभाषा बंगला को तो हम कदापि नहीं छोड़ सकते। भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिंदी या हिंदुस्तानी तो हमको सीखनी ही चाहिए और स्वाधीन भारत के नवयुवकों को हिंदी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच आदि यूरोपीय भाषाओं में से भी एक-दो सीखनी पड़ेगी, नहीं तो हम अंतरराष्ट्रीय मामलों में दूसरी जातियों का मुकाबला नहीं कर पायेंगे।" नेताजी ने स्पष्ट कहा है कि भाषाओं को सीखने में किसी तरह की संकीर्ण दृष्टि नहीं अपनानी चाहिए। दरअसल अंतर्सम्बन्ध के जरिये ही संकीर्णता से परित्राण मिलता है। समाज में संकीर्णता नामक रोग लम्बे अर्से से विद्यमान है। इस रोग से निजात पाने के लिए अंतर्सम्बन्ध पर पूरी तैयारी के साथ विचार करना आवश्यक है।

उल्लेखनीय है कि भाषाओं के बीच अंतर्सम्बन्ध का आधार तभी मजबूत होता है, जब सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक सौहार्द्र का माहौल हो । सौहार्द्र के माहौल में अंतर्सम्बन्ध का रूप निखरता है। पश्चिम बंगाल में यह परिवेश बनने के पीछे कई कारण हैं। उन कारणों का विश्लेषण करने से पहले यह जरूर समझना चाहिए कि भारत में भाषाओं के अंतर्सम्बन्ध का इतिहास साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन से शुरू हुआ है। कोलकाता में सबसे पहले अंग्रेजों का आगमन हुआ तथा ब्रितानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सबसे पहले कोलकाता ने आंदोलन आरंभ किया। यह सच है कि आरंभ में उस आंदोलन का स्तर कुछ कमजोर था, परन्तु उसका अभिमुख तीजोदीप्त था। यही कारण है कि कोलकाता महानगरी आधुनिकता की बानगी पेश करने में अन्य शहर या महानगरी से पीछे नहीं रही।

सन् १८२३ में जब राजा राम मोहन राय द्वारा संपादित 'मिरात-उल अखबार' को अंग्रेजों ने बंद कर दिया, तब कोलकाता के तात्कालीन विद्वानों ने ब्रितानी हुकूमत के विरुद्ध एक तरह से संघर्ष आरंभ कर दिया और उस संघर्ष के दौरान बांग्ला भाषा की निकटता अन्य भाषाओं से बढ़ने लगी। इसी समय में बांग्ला और हिन्दी का अंतर्सम्बन्ध स्थापित हुआ तथा ज्यों-ज्यों समय बढ़ता गया, त्यों-त्यों यह सम्बन्ध ठोस होता गया। आजादी की लड़ाई के दौरान यह सम्बन्ध सबसे ज्यादा निखरकर सामने आया। खासकर इन दोनों भाषाओं के बीच अनुवाद का काम तेज हुआ। रोजगार की तलाश में हिंदी प्रदेश के लोग बंगाल पहुँचे। चट उद्योग उस समय काफी लोकप्रिय उद्योग के रूप में प्रसिद्ध हुआ। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के लोग उस उद्योग से जुड़े।



Scanned by CamScanner

अंग्रेजों के साथ-साथ बंगाली इस उद्योग से सीधे-सीधे जुड़े हुए थे। उनका मालिकाना था, लेकिन मजदूरों में हिंदी भाषियों की संख्या सबसे अधिक थी। बांग्ला और हिंदी भाषाओं के बीच जब-जब अंतर्सम्बन्ध की चर्चा होगी, तब-तब उन मजदूरों की भूमिका को ओझल नहीं किया जा सकता है। उन मजदूरों की भारी तादाद को देखकर बंगाली समाज हिंदी भाषा के प्रति आकृष्ट हुआ। कल-कारखानों सहित चाय बगानों में हिंदी भाषी मजदूर काम करते थे। उनकी श्रमशीलता का इतना प्रभाव था कि अन्य भाषी मजदूर भी हिन्दी के निकट आये तथा हिन्दी समझने लगे। यहां यह भी उल्लेख करना जरूरी है कि हिंदी भाषा के साथ-साथ कल-कारखानों के इलाकों में मैथिली-भोजपुरी-मगही भाषाओं की निकटता बंगाली समाज से बढ़ने लगी। बढ़ती इस निकटता को गांधी जी के आंदोलनों से प्राणशक्ति मिली।

इस बढ़ती निकटता पर जब साम्प्रदायिक कुदृष्टि लगी, तब गांधी जी ने अपनी जान की बाजी लगाकर उसे बचाने का प्रयास किया। यह एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। इस आंदोलन के जरिये समाज के हर मुकाम पर सफलताएं हासिल हुईं। इन्हीं सफलताओं के बीच राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के योगदान का अवलोकन करना उचित होगा, क्योंकि इस समिति ने बंगाल के दूरदराज गांवों-शहरों में स्थित बांग्ला माध्यम के विद्यालयों में हिंदी भाषा सिखाने का प्रयास किया। इस प्रयास के जरिये हिंदी के प्रति जो पढ़े-लिखे बंगाली समाज के हिस्से में यह डर था कि हिंदी को जोर जबर्दस्ती थोपने का प्रयास किया जा रहा है, वह डर अभी काफी कम हो गया है। लेकिन यह याद रखना होगा कि अभी भी यह डर पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। इसे पूरी तरह खत्म होने में समय लगेगा और हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए और सक्रिय होने की जरूरत है। इस दिशा में यह प्रचार समिति काफी सजगता के साथ आगे बढ़ रही है।

आजादी की लड़ाई के दौरान इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक राह मिली। यह सच है कि वह राह ही सब कुछ नहीं थी। कठिन डगर थी। समाज ने उसे अपनाया। उस डगर पर सौहार्द्र-सम्प्रीति को पाथेय बनाकर जिस तरह आगे बढ़ने की जरूरत थी, उसमें कुछ कमी रही। चाहे वह अभाव किसी रूप में क्यों न सामने आया हो, लेकिन उस अभाव ने हमारे समाज में भाषाई दूरियों को जन्म दिया।

हिंदी और बांग्ला  ही क्यों; यहां तक कि विद्यापति और कबीर को आमने सामने खड़ा कर विभेद की राजनीति को हवा देने की कोशिश की गयी है। यह कहने में संकोच नहीं है कि किसी कीमत पर विद्यापति और कबीर आमने-सामने खड़े नहीं हो सकते। दोनों महान कवि



Scanned by CamScanner

हमारी परम्परा के आधार स्तंभ हैं, एक स्तंभ को कमजोर करने से दूसरा स्तंभ खुद-ब-खुद कमजोर होगा। यदि कोई चाहकर भी इन स्तंभों को कमजोर करने का प्रयास करेगा, तो उसके सम्बन्ध में हमारा समाज यही कहेगा कि वह व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार है। इस डिजिटल युग ने इस रोग को व्यापक स्तर पर फैलाया है; जिसके कई उदाहरण कोलकाता की सड़कों से लेकर दिल्ली की सड़कों तक देखने को मिल जायेंगे।

भाषाओं के बीच अंतर्सम्बन्ध स्थापित करने के जरिये समाज को इस तरह की बीमारियों से बचाना उचित और फौरी कार्य है। इस दिशा में कोलकाता सहित पूरा पश्चिम बंगाल पूरी तन्मयता के साथ लगा हुआ है। यही कारण है कि पश्चिम बंगाल के कोलकाता से सन्मार्ग, प्रभात खबर, भारत मित्र, विश्वमित्र, जनसत्ता, राजस्थान पत्रिका , दैनिक छपते-छपते, दैनिक जागरण जैसे अखबारों का छपना और प्रसार जारी है। इन हिंदी दैनिक अखबारों के साथ-साथ प्रमुख अखबारों का ब्यूरो कोलकाता में है। भाषा के अंतर्सम्बन्ध को स्थापित करने तथा उसे मजबूत करने में दैनिक अखबारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही कारण है कि बांग्ला दैनिक अखबारों के दफ्तरों में हिंदी अखबार देखने को मिलते हैं। इन दोनों माध्यमों के अखबारों में खबरों का आदान-प्रदान ही नहीं होता है बल्कि फीचर का भी आदान-प्रदान होता है। कई बांग्ला भाषी पत्रकार हिंदी अखबारों में काम करते हैं तथा हिंदी भाषी पत्रकार बांग्ला अखबारों में काम करते हैं। इस सिलसिले में यह कहना उचित होगा कि अंतर्सम्बन्ध रोजी-रोटी तक पहुँच गया है। इस सम्बन्ध को और मधुर से मधुरतम बनाने में रेडियो और दूरदर्शन की भूमिका भी सराहनीय है।

राज्य के शीर्षस्थ राजनीतिक नेताओं के जरिये हिंदी भाषा में चुनाव की अपील प्रसारित करने से भी दोनों भाषाओं के बीच सम्पर्क बढ़ा है। पश्चिम बंगाल के राजनीतिक दलों को यह विश्वास है कि हिंदी भाषा में अपील करने से हिंदी भाषियों के वोट प्राप्त होते हैं। इसलिए वे नेता हिंदी भाषा बोलते हैं और अपने कार्यकर्त्ताओं को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। इस सिलसिले में यह कहना उचित होगा कि जहां पुराने शासन में मंत्रियों को हिंदी सिखाने के लिए कक्षाएं लगायी गयीं, वहीं वर्तमान शासन ने हिंदी माध्यम से कालेज स्थापित करने की कोशिशें शुरू की हैं। सरकारी चेष्टाओं से भी पश्चिम बंगाल में हिंदी-बांग्ला के रिश्ते को पुष्ट करने की पहल बराबर होती रही है। दरअसल पश्चिम बंगाल की यह पहल सांस्कृतिक-सामाजिक ताने-बाने की उपज है. इस ताने-बाने के चलते ही अंतर्सम्बन्ध पोख्ता होता है।



Scanned by CamScanner

खासकर शारदीय उत्सव के समय पश्चिम बंगाल में कई पत्र-पत्रिकाओं के जरिये हिंदी के आलेख-कविता-कहानी-उपन्यास-नाटकों का हिंदी में अनुवाद होता है तथा उस मौके पर विभिन्न तरह की रचनाओं को प्रकाशित किया जाता है। इस सिलसिले में 'समयेर संस्कृति', 'नतून चिट्ठी', 'गल्पगुच्छ', 'शतमुखी', 'झड़ो हावा', 'समन्वय','अतींद्रिला','संवर्तिका', 'नन्दन', 'साथी हथियार', 'चरैबेती', 'एकुश शतक', 'सत्ययुग' और कई पत्रिकाएं हैं, जिन पत्रिकाओं के जरिये हिंदी के समकालीन साहित्य का अनुवाद प्रकाशित किया जाता है। इस शारदीय उत्सव के मौके पर रेणु की 'नेपाली क्रांति कथा' नामक पुस्तिका का बांग्ला अनुवाद 'एकुश शतक' पत्रिका के शारदीय विशेषांक २०१४ में प्रकाशित हुआ है। इस संदर्भ में 'साथी हथियार', 'अतींद्रिला', 'समयेर संस्कृति' जैसी पत्रिकाओं के नाम गिनाये जा सकते हैं। प्रेमचंद, नागार्जुन, फ़ैज सहित समकालीन हिंदी साहित्य तथा मीडिया पर कई आलेख बांग्ला की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में विगत शारद उत्सव के मौके पर प्रकाशित हुए हैं।

स्वाधीनता शारदीय विशेषांक हिंदी में शारदीय उत्सव के मौके पर छपता है। इस विशेषांक में बांग्ला के नाटक-कविता-साहित्यिक-सांस्कृतिक आलेख का अनुवाद छपता है। इस विशेषांक की तरफ से साप्ताहिक अखबार भी निकाला जाता है, जो प्रत्येक सप्ताह बांग्ला के किसी न किसी साहित्यिक-सांस्कृतिक आलेख का हिंदी अनुवाद प्रकाशित करता है। बांग्ला के आर्थिक और राजनीतिक आलेखों का प्रकाशन इस साप्ताहिक के जरिये निरंतर होता रहता है। यही कारण है कि पढ़े-लिखे बंगाली समाज में इस साप्ताहिक अखबार का महत्वपूर्ण असर है।

पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त बांग्ला के साहित्यकारों के संगठन हिंदी भाषा को प्रसारित करने के लिए समय-समय पर विभिन्न भाषाओं के कवियों को एकत्रित कर बराबर कवि सम्मेलनों का आयोजन करते हैं, जहां विविध विषय और मुद्दे सामने आते हैं। विभिन्न भाषाओं की कविताओं के समकालीन रूप देखने को मिलते हैं। उन सम्मेलनों में कविता प्रेमियों की उपस्थिति भी उल्लेखनीय होती है। नाटकों के जरिये भी पश्चिम बंगाल में बांग्ला और हिंदी भाषाएं एक-दूसरे के करीब आयी हैं, इसकी एक प्रमुख परम्परा शुरू से रही है। मीडिया के विविध रूपों में हिंदी-बांग्ला एक-दूसरे के निकट आयी है। हिंदी के साहित्यिक-सांस्कृतिक संगठनों ने भी बांग्ला भाषा को अपनी ओर खींचने तथा अपने कार्यों से परिचित कराने की कोशिश की है। हिंदी के पुस्तकालयों में बंगला की पुस्तकें हैं और बांग्ला के पुस्तकालयों में भी हिंदी की पुस्तकें हैं। पुस्तकालयों के जरिये अंतर्सम्बन्ध को मजबूत करने



Scanned by CamScanner

की चेष्टा की जाती है। इस पर गंभीरता से विचार करने की कोशिश वक्त की मांग है। कोलकाता में हिंदी प्रकाशकों की संख्या कम है। कई तरह की जटिलताएं उनके सामने हैं। सीमित सीमाओं में रहकर उन प्रकाशकों को किताब छापनी पड़ती है। फिलहाल उन सीमाओं से हिंदी प्रकाशकों का बाहर निकलना मुश्किल है। कई बंगाली प्रकाशकों ने भी हिंदी पुस्तकों को बड़ी गंभीरता से छापने का काम आरंभ किया है, जहां से अन्य प्रांतों के लेखकों की किताबें छपती हैं। कहने का अर्थ यह है कि बंगाली प्रकाशकों ने सदा हिंदी की पुस्तकों और अखबारों को बड़ी उदारता के साथ प्रकाशित किया है।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि कोलकाता और पश्चिम बंगाल में हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्ध को मजबूत करने के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक फलकों पर वे सारे प्रयास जारी हैं, जो प्रयास सम्बन्धों को मजबूत करने तथा उसे पल्लिवत-पुष्पित करने के लिए अपेक्षित हैं। हिंदी के रचनाकारों को बांग्ला की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है तथा बांग्ला के रचनाकारों को हिंदी में पढ़ाया जाता है। हिंदी-बांग्ला के अंतर्सम्बन्धों को स्थापित करने तथा उसे व्यापकता देने में बंगाल के विश्वविद्यालयों की सराहनीय भूमिका है। इस सम्बन्ध में कलकत्ता विश्वविद्यालय का नाम उल्लेखनीय है, जिसने दोनों भाषाओं के बीच सेतु स्थापित करने की कोशिश की है; उस पर आलोकपात करना उचित है। पश्चिम बंगाल में लगातार विश्वविद्यालयों के जरिये हिंदी-बांग्ला भाषाओं को निकट लाने का प्रयास किया गया है।

उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में दो भाषाओं के बीच सेतु बनने की परम्परा रही है और जब वह परम्परा रोजी-रोटी का साधन बन जाती है, तब अंतर्सम्बन्ध का महत्त्वपूर्ण सिलसिला आरंभ होता है। भाषा इसी सिलसिले से अपनी जीवंतता बनाये रखती है। जब हिंदी भाषाओं की रचनाओं को अधिक से अधिक बांग्ला भाषा में अनूदित किया जायेगा, तब यह सम्बन्ध और देखने लायक होगा। इसके जरिये ज्ञान-मैत्री-समन्वय-त्याग की भावना पनपती है। यही भावना अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान प्रस्तुत करने की पहली और आखिरी सूचना है। इस सूचना को व्यापकता देने के लिए भाषा को हर क्षेत्र में सौहार्द्र स्थापित करते हुए ऐक्य की भावना को प्राथमिकता देनी होती है। इसी गुण के चलते भाषा समाज को एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक एक सरल रेखा पर बांधे रखती है। समाज को एक सूत्र में बांधने के गुण के कारण ही भाषा अन्य भाषाओं से अंतर्सम्बन्ध स्थापित करते हुए विजय पताका लेकर मानव सभ्यता के विजय पथ पर जय-ध्वनि सुनाती है तथा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित



Scanned by CamScanner

करती है। यही प्रेरणा उसका शंखनाद है। इस शंखनाद में शांति और सुकून का भाव होता है, जो पूरे परिमंडल को ऊर्जस्वित करने का हौंसला रखता है।

इस सम्बन्ध को बनाने के साथ-साथ निभाने पर हिंदी और बंगाली समाज सतर्क और सावधान है। यही कारण है कि अंतर्सम्बन्ध की भावना पारदर्शिता पर निर्भर करती है। बांग्ला और हिंदी समाज में यह पारदर्शिता विद्यमान है। इसी के बल पर संकीर्णता दूर होती है। जब-जब अंतर्सम्बन्ध स्थापित करने की स्थिति पैदा होती है, तब-तब संकीर्णता जैसी बीमारी उत्पन्न होती है। इस लाइलाज बीमारी से दूर रहने के लिए पारदर्शिता पर बल देना जरूरी होता है तभी जाकर दो भाषाएं करीब आती हैं। इस करीबी को और असरदार बनाने के लिए सक्रियता पर जोर देना आवश्यक है। सक्रियता ही किसी सम्बन्ध की पहली शर्त है, जिसके जरिये अंतर्सम्बन्धों का कायाकल्प किया जाता है। जिद से सम्बन्ध बनते नहीं बल्कि बिगड़ते हैं।

अंतर्सम्बन्ध की विकास-प्रक्रिया में किसी तरह की जिद पूरी तरह से बाधक बनकर खड़ी होती है। वैज्ञानिक सोच और सक्रिय समझदारी से ही जिद दूर होती है। दरअसल यह जिद मध्ययुगीनता की उपज है, जिसने मानव सभ्यता को आ़गे बढ़ने में बार-बार बाधाएं उत्पन्न की हैं। इन बाधाओं से बाहर निकलने का एक मात्र आधार तर्क है। सक्रिय और पारदर्शी तर्क की पवित्र भूमि पर आज तक किसी तरह के प्रश्न नहीं उठे हैं। यही तर्क जीवन को वक्र रेखा से बाहर निकाल कर एक उज्ज्वल भविष्य की गारंटी मुहैय्या करता है। इस बारे में रवीन्द्रनाथ ने बिल्कुल सही जिक्र किया है कि जीवन वक्र रेखा पर चलता है।

हिंदी और बांग्ला का अंतर्सम्बन्ध निश्चित रूप से एक वक्र रेखा पर आधारित है, जहां नाना तरह के झंझावात हैं। उन झंझावतों से बाहर निकलने के लिए सक्रिय और पारदर्शी तर्क के अलावा और हमारे पास कोई दूसरा साधन नहीं है। इसके जरिये वर्तमान में हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्धों को अधिक से अधिक पुष्ट करना संभव है। इसी संभावना को मुश्किलों के बीच तलाश करना तथा उसे अमली जामा पहनाना वर्तमान का महती कर्तव्य है, इस कर्तव्य को पूरा करने से अंतर्सम्बन्ध की भावना और दूर तक प्रसारित होती है, जिसके ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार होते हैं। इसी ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार के बल पर हिंदी-बांग्ला का अंतर्सम्बन्ध विश्व में अपना ध्वज फहराते हुए आगे बढ़ रहा है जो हिंदी और बांग्ला के इस अंतर्सम्बन्ध को सुकून और शांति दे सकता है।



Scanned by CamScanner

दरअसल विश्वास ही अंतर्सम्बन्ध की वह कुंजी है, जो वर्षों-वर्ष बंद पड़े ताले को खोलकर एक उन्मुक्त वातावरण से साक्षात्कार कराता है तथा उसे नयी जिंदगी प्रदान करता है, पर भाषा के बिना इस जिंदगी की आलोचना नहीं हो पाती है, यह भी सच है कि भाषा के बिना वह आलोचना अधूरी साबित होती है, उस अधूरेपन को पूरा करने का काम अंतर्सम्बन्ध के जरिये ही संभव है। तर्क को यही संभावना अभय और अमर वरदान देती है, जिस सरल रेखा पर दो विपरीत ध्रुव अलग-अलग होते हुए भी अपने अस्तित्व को बनाये और बचाये रखते हैं, जैसाकि अंतर्सम्बन्ध रूपी सरल रेखा पर हिंदी और बांग्ला अपने-अपने अस्तित्व को बचाये हुए हैं; एक रहने लायक वतन बनाने के लिए दोनों भाषाएं अनवरत संघर्षरत हैं, इस संघर्ष के मैदान में उज्ज्वल भविष्य अपने सितारे के साथ मौजूद है; जो हिंदी और बांग्ला के अंतर्सम्बन्धों के बीच कई संभावनाओं को उजागर करता है। इन संभावनाओं को सिर्फ व्याकरण या भाव की दुनिया में खोजना ही उचित नहीं है बल्कि समाज के हर मोड़ पर उनकी उपस्थिति दृष्टिगोचर है; जिसकी चर्चा समाज के सभी स्तरों पर करना एक दायित्वशील कर्त्तव्य है। यही कर्त्तव्य मानव जीवन को नयी ऊर्जा देता है। वर्त्तमान में इसे ऊर्जस्वित करने की प्रक्रिया को तार्किकता और वैज्ञानिकता हासिल हुई है, जो अंतर्सम्बन्ध की मजबूत गांरटी है। इसी से ऐक्य की रक्षा होती है, जो सत्य का शिखर है तथा अंतर्सम्बन्ध की फसल है। इस बारे में रवीन्द्रनाथ ने ठीक लिखा है –"ऐक्य के अभाव से मनुष्य बर्बर हो जाता है, ऐक्य की शिथिलता से मनुष्यत्व व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि सहकारिता ही मनुष्य का सत्य धर्म है, उसकी श्रेष्ठता का आधार है।" वस्तुतः भाषाई अंतर्सम्बन्ध ही इस ऐक्य का आधार है, जिसका बेहतरीन उदाहरण हिंदी और बांग्ला का अंतर्सम्बन्ध है।

ΩΩΩ



Scanned by CamScanner